Sem-6, DSE-3

सियारामशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

राष्ट्रीय चेतना भारत में वैदिक वाङ्मय से लेकर आधुनिक हिन्दी साहित्य तक निरन्तर प्रवहमान रही है। किन्तु भारतीय प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दिनों से लेकर यह चेतना प्रभावी रूप से हिन्दी साहित्य में गुंजित है। इस राष्ट्रीय चेतना को अहिंसक शांत रूप में साहित्य में वाणी देने का काम गांधीवादी कवि सियारामशरण गुप्त ने किया है। द्विवेदीयुगीन कवियों के रूप में कवि गुप्तजी ने भारत के गौरवशाली अतीत और पराधीन वर्तमान को चित्रित किया। राष्ट्रीय आंदोलन के दो पृथक वर्गों – गरम दल और नरम दल के कारण हिन्दी राष्ट्रीय काव्य-धारा भी दो दिशाओं में प्रवाहित हुई। नवीन, दिनकर जैसे राष्ट्रीय-चेतना के उग्र गायकों से विपरीत सियारामशरण गुप्त ने गांधीजी के आदर्श – 'अहिंसा परमोधर्मः' की चेतना को प्रवाहित किया।

सियारामशरण जी की अनेक रचनाएँ – मौर्य-विजय, आत्मोत्सर्ग, बापू, नोआखाली, उन्मुक्त, नकुल आदि राष्ट्रीय चेतना से संचरित हैं। इन रचनाओं में कवि ने गांधी-दर्शन के सैद्धान्तिक पक्ष का अवलम्बन न लेकर व्यावहारिक पक्ष का आधार लिया है। समसामयिक घटनाओं को देखकर वे युग-धर्म के प्रति दायित्व समझते हैं। उनमें परम्परा के प्रति प्रतिबद्धता न होकर वर्तमान को उस कसौटी पर कसने की चाह है। आक्रोश और हुंकार से अलग शान्ति और प्रेम के बल पर कवि की स्वतंत्रता पाने की चाह है। वहाँ करुणा और संवेदनशीलता है।

'मौर्य-विजय' में कवि ने अतीत का स्मरण कर वर्तमान की दुर्दशा को प्रकट किया है। 'गावेंगे ऐसे गीत हम क्या फिर और किसी समय' कह कर कवि ने आत्मविश्वास को जगाया है। वे वर्तमान दशा से भी उतनी ही गहराई से प्रतिबद्ध हैं। वे गणेशशंकर विद्यार्थी के आत्मबलिदान की घटना द्वारा साम्प्रदायिकता के चंगुल से देश को सचेत करते हैं – "हिन्दू मुसलमान दोनों का
यह संयुक्त राष्ट्र होगा।"

'बापू' काव्य में कवि ने मानवता के उद्धारक गांधीजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। डॉ. देवराज शर्मा ने लिखा है – "'बापू' राष्ट्रीयता के आधार पर चित्रित काव्यात्मक झाँकी है। इसमें राष्ट्रीयता और देशभक्ति के स्थान-स्थान पर दर्शन होते हैं।" इसी तरह 'नोआखाली' में गांधीजी की ~~बोस~~ नोआखाली यात्रा के माध्यम से हिन्दू-मुस्लिम

एकता की कामना की गयी है। अपने काव्य-'दैनिकी' में कवि सामयिक घटना व समस्या पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। कवि ने स्वयं लिखा है, "जनरुचि को आज के संग्राम की विकट परिस्थिति ने सस्ती और साधारण वस्तुओं की ओर उन्मुख कर दिया है।" अपनी 'जयहिन्द' कविता में कवि अपने भाव-प्रसूनों से स्वतंत्रता के अरुणोदय काल की अर्चना करते हैं —

"आज के स्वतंत्र अरुणोदय में
उद्गत धात्री के अभय में ....
आज आत्मगौरव की हानि नहीं
अन्तस् में दासता की ग्लानि नहीं।"

सियारामशरणजी का गीति-नाट्य 'उन्मुक्त' एक यथार्थपरक कृति है, जिसमें युद्ध की आवश्यकता, बलिदान, युद्ध की विभीषिका आदि का चित्रांकन है। ऐतिहासिक रचना 'नकुल' में वर्तमान की अवस्था चित्रित है। कवि शोषण, अत्याचार, साम्प्रदायिकता, अन्याय का शमन एवं मानवता का कल्याण चाहता है। किन्तु कवि सियारामशरण का सम्पूर्ण काव्य भारतवर्ष की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक पहचान के प्रति समर्पित है। भारत की सांस्कृतिक विशेषताएँ कवि के लिए देश की स्वतंत्रता का आधार-स्तम्भ हैं। इसीलिए कवि की वाणी गूँज उठती है —

"सबका सुहित हमारा हित है, सार्वभौम हम सार्वजनीन,
अपनी इस आसिंधु धरा में नहीं रहेंगे होकर हीन!"

निश्चय ही, सियारामशरणजी का काव्य यद्यपि प्रेम, विषाद, अन्तर्द्वंद्व जैसे भावों के प्रस्फुटन में भी सक्षम है, किन्तु उनके काव्य का प्रधान स्वर स्वतंत्रता की वह पुकार है, जिसे सत्य और अहिंसा के शस्त्र से महात्मा गांधी ने देश में जन-जन को जोड़ा था।